



CK  
15/7/86

# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)

PART II—Section 3—Sub-section (I)

शांघाकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 244]

नई दिल्ली, सोमवार, मई 19, 1986/वैशाख 29, 1908

No. 244] NEW DELHI, MONDAY, MAY 19, 1986/VAISAKHA 29, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संलग्न वी जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके।

Separate Pagings is given to this Part in order that it may be filed as  
separate compilation

विधि और न्याय मंत्रालय

(विधायी विभाग)

अधिकूचना

नई दिल्ली, 19 मई, 1986

सा.वा.नि. 276(अ) :—केन्द्रीय सरकार, मुस्लिम स्त्री (विवाह विचारण पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 25) की धारा 6 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उक्त अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए, निम्नलिखित नियम बनाती है, ग्राहीतः—

1. संक्षिप्त नाम और प्रान्तम् :—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम मुस्लिम स्त्री (विवाह विचारण पर अधिकार संरक्षण) नियम, 1986 है।

(2) मे नुरत्त प्रवृत्त होंगे।

2. परिशासाएः :—इन नियमों में, जब तक कि संवर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(a) "अधिनियम" से मुस्लिम स्त्री (विवाह विचारण पर अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 25) अभिप्रैत है;

(b) "संहिता" से दण प्रक्रिया संहिता, 1973 (1974 का 2) अभिप्रैत है; और

(c) "प्रलूप" से इन नियमों से उपायक प्रलूप अभिप्रैत है।

3. समन की तारीख :—(1) इस अधिनियम के अधीन किए गए किसी आवेदन पर भजिस्ट्रेट द्वारा जारी किया गया प्रत्येक समन लिखित

रूप में और दो प्रतियों में भजिस्ट्रेट द्वारा या प्रथ्य ऐसे अधिकारी द्वारा जिसे वह, समय-समय पर निर्विष्ट करे, हस्ताक्षरित होगा और उस पर न्यायालय की मुद्रा लगी होगी।

(2) ऐसे प्रत्येक समन के साथ आवेदन की एक सत्य प्रतिलिपि होगी।

(3) उप-नियम (1) के अधीन जारी किए गए प्रत्येक समन में आवेदन की पहली सुनवाई की तारीख निर्विष्ट होगी जो उस तारीख से सात दिन के पश्चात् की तारीख नहीं होगी जिस तारीख को समन जारी किया गया है।

(4) प्रत्येक समन की तामील किसी पुलिस अधिकारी द्वारा या उस न्यायालय के, जिसने वह समन जारी किया है, किसी अधिकारी द्वारा की जाएगी।

(5) यदि साथ्य हो तो समन, प्रत्यर्थी पर, समन की तामील, उसे उस समन की दो प्रतियों में से एक का परिशान या निविदान करके व्यक्तिक रूप से की जाएगी।

(6) प्रत्येक प्रत्यर्थी, जिस पर समन की ऐसे तामील की नहीं है, यदि तामील करने वाले अधिकारी द्वारा ऐसी ग्रेड की जाती है, तो, दूसरे प्रति के पृष्ठ भाग पर उसके लिए रसीद हस्ताक्षरित करेगा।

(7) जहां प्रत्यर्थी सम्बद्ध तत्परता बरतने पर वही न मिल सके वही समन की तामील दो प्रतियों में से एक को उसके कुटुम्ब के उसके साथ रखने वाले किसी व्यापक पुरुष सदस्य के पास उस व्यक्ति के लिए छोड़कर की जा सकती है और यदि तामील करने वाले अधिकारी द्वारा

ऐसी भ्रष्टाकारी जाती है तो, जिस व्यक्ति के पास समन ऐसे छोड़ा जाता है उस शूरुरी प्रति के पृष्ठ भाग पर उसके लिए रसीद हस्ताक्षरित करेगा।

(8) यदि उपनियम (6) या उपनियम (7) में उपलब्धित रूप से तामील सम्बन्धित तत्परता बरतने पर भी न की जा सके तो, तामील करने वाला प्रधिकारी समन की दो प्रतियों में से एक को उस गृह या बासस्थान के, जिसमें प्रत्यर्थी मामूली तौर पर निवास करता है, किसी सहज दृश्य भाग में लगाएगा; और तब न्यायालय ऐसी जांच करने के पश्चात् जैसी वह टीक समझे, या तो यह घोषित कर मकता है कि समन की सम्बन्धित तामील हो गई है, या वह ऐसी रीति से नहीं तामील का अवेद्य दे सकता है, जिसे वह उद्धित समझे।

(9) जब न्यायालय यह चाहता है कि, उसके द्वारा जारी किए गए समन की तामील उसकी स्पानीय प्रधिकारिता के बाहर किसी स्थान में की जाए, तब वह यामूली तौर पर ऐसा समन दो प्रतियों में, उस मजिस्ट्रेट को भेजेगा जिसकी स्पानीय प्रधिकारिता के अन्वर उसकी तामील की जानी है या प्रत्यर्थी निवास करता है।

(10) जब न्यायालय द्वारा जारी किए गए समन की तामील उसकी स्पानीय प्रधिकारिता के बाहर की गई है, तब और ऐसे किसी मामले में जिसमें वह प्रधिकारी जिसने समन की तामील की है, मामले की सुनवाई के समय उपस्थित नहीं है; मजिस्ट्रेट के समझ किया गया तात्पर्य यह शपथपत्र कि ऐसे समन की तामील की गई है और समन की शूरुरी प्रति, जिसका उस व्यक्ति द्वारा जिसको समन परिदृष्ट या निविदत्त किया गया था, या जिसके पास वह छोड़ा गया था उपनियम (6) या उपनियम (7) पृष्ठान्तिक होगा तात्पर्यत है, साथ में ग्राह्य होगा, और जब तक तत्प्रतिकूल भावित न किया जाए उससे किए गए कथन सही माने जाएंगे।

(11) उपनियम (10) में वर्णित शपथपत्र समन की दूसरी प्रति से संतुलन किया जा सकता है और उस न्यायालय को भेजा जा सकता है।

4. साध्य.—प्रधिनियम के प्रधीन कार्यवाही में सब साध्य ऐसे प्रत्यर्थी की उपस्थिति में लिया जाएगा जिसके विरुद्ध उपबंध करने और भरणपोषण, मेहर या डाकर का संदेश करने या सम्पत्ति का परिदृष्ट करने का प्रांदेश देने की प्रस्थापना है या जब उसकी व्यक्तिगत हाजिरी से अधिभुति दे दी गई है, तब उसके प्लिडर की उपस्थिति में लिया जाएगा और संहिता के प्रधीन संक्षिप्त विवारण के लिए विनिरिट रीति से अभिलिखित किया जाएगा;

परन्तु यदि मजिस्ट्रेट का यह समाधान हो जाता है कि प्रत्यर्थी तामील से जानबूझकर बच रहा है या न्यायालय भी हाजिर होने में जानबूझकर उपेक्षा कर रहा है, तो मजिस्ट्रेट उस मामले को एकप्रत्यीय रूप में सुनने और अवधारण करने के लिए ग्राप्रसर हो सकता है, तथा ऐसे दिया गया कोई प्रांदेश उसकी तारीख से सात दिन के अन्दर किए गए आवेदन पर वर्णित अच्छे कारण से ऐसे निर्वाचनों के प्रधीन, जिनके अंतर्गत विवोधी पक्षकार को खर्च के संदाय के बारे में निर्वाचन भी हैं, जो मजिस्ट्रेट न्यायालय और उचित समझे, अप्राप्त किया जा सकता है।

5. कार्यवाहीयों को मुल्यवानी या स्थगित करने की शक्ति:—प्रधिनियम के प्रधीन प्रत्येक आवेदन में कार्यवाहीय व्यापारसंबंध शीघ्रता से को जाएगी और विशिष्टतः जब साक्षियों की परीक्षा एक बार आरंभ हो जाती है तो, वह सभी हाजिर साक्षियों की परीक्षा हो जाने तक विनियित जारी रखी जाएगी, जब तक कि ऐसे कारणों से, जो लेखाबद्ध किए जाएंगे, न्यायालय अग्रणी दिन से पहले के लिए उसे स्थगित करना आवश्यक न हो।

6. बर्च:—प्रधिनियम के प्रधीन आवेदनों की आवश्यकार्यवाही करने में न्यायालय को बर्च की आवश्यकता ऐसा आवेदन करने की शक्ति होगी जैसा वह उचित समझे।

7. धारा 5 के प्रधीन शपथपत्र—प्रधिनियम की धारा 5 के प्रधीन फारूल किया गया शपथपत्र प्रस्तुप “क” में होगा।

8. धारा 5 के प्रधीन घोषणा—धारा 5 के प्रधीन लिखित रूप में फारूल की गई घोषणा प्रश्नपत्र “ब” में होगी।

प्रश्नपत्र “क”

शपथपत्र का प्रश्नपत्र

(नियम 7 देखिए।)

मै/हम ..... सुपुत्र/पत्नी .....  
आपु ..... बर्च ..... निवासी ..... और .....  
..... सुपुत्र/पत्नी ..... , आपु ..... बर्च,  
निवासी ..... निवासी ..... आपु ..... बर्च,  
कथन करता/करती हूँ/करते हैं:—

1. मैंने/हमने मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर प्रधिकार संरक्षण) प्रधिनियम, 1986 की धारा 5 के उपबंधों और दण्ड प्रतिया संहिता, 1973 की धारा 125 से धारा 128 तक के उपबंधों को अच्छी प्रकार से समझ लिया है।

2. मै/हम ..... मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर प्रधिकार संरक्षण) प्रधिनियम, 1986 के उपबंधों की तुलना में, दण्ड प्रतिया संहिता, 1973 की धारा 125 से धारा 128 तक के उपबंधों से शासित होना चाहता/चाहती हूँ/चाहते हैं।

3. ऊपर घोषणा पत्र में जो कुछ कहा गया है वह सत्य है।  
अभिनाशी

प्राज तारीख ..... , 19 ..... को हस्ताक्षरित और सत्यापित।  
अभिनाशी

प्रश्नपत्र “ब”  
घोषणा का प्रश्नपत्र  
(नियम 8 देखिए।)

मै/हम ..... , सुपुत्र/पत्नी .....  
आपु ..... बर्च, निवासी ..... ,  
और ..... , सुपुत्र/पत्नी .....  
आपु ..... बर्च, निवासी .....  
..... सपथ पर निम्नलिखित रूप में घोषणा करता/करती हूँ/करते हैं:—

1. मैंने/हमने मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर प्रधिकार संरक्षण) प्रधिनियम, 1986 के उपबंधों और दण्ड प्रतिया गंहिता, 1973 की धारा 125 से धारा 128 तक के उपबंधों को अच्छी प्रकार से समझ लिया है।

2. मै/हम ..... मुस्लिम स्त्री (विवाह विच्छेद पर प्रधिनियम, 1986 के उपबंधों की तुलना में दण्ड प्रतिया संहिता, 1973 की धारा 125 से धारा 128 तक के उपबंधों से शासित होना चाहता/चाहती हूँ/चाहते हैं।

3. ऊपर घोषणा में जो कुछ कहा गया है वह ग्रन्थ है।  
अभिनाशी

प्राज तारीख ..... , 19 ..... को हस्ताक्षरित और सत्यापित।  
अभिनाशी

[का.सं.-II (27)/85-वि.-III]

सी. रामन मेनन, अपर सचिव

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE  
(Legislative Department)  
NOTIFICATION

New Delhi, the 19th May, 1986

G.S.R. 776(E):—In exercise of the powers conferred by section 6 of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986 (25 of 1986), the Central Government hereby makes the following rules for carrying out the purposes of the said Act, namely:—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Rules, 1986.

(2) They shall come into force at once.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires.—

- (a) “Act” means the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986 (25 of 1986);
- (b) “Code” means the Code of Criminal Procedure, 1973 (2 of 1974); and
- (c) “Form” means form annexed to these rules.

3. Service of summons.—(1) Every summons issued by a Magistrate on an application made under the Act, shall be in writing, in duplicate, signed by the Magistrate or by such other officer as he may, from time to time, direct, and shall bear the seal of the Court.

(2) Every such summons shall be accompanied by a true copy of the application.

(3) Every summons issued under sub-rule (1) shall specify the date of the first hearing of the application which shall not be later than seven days from the date on which the summons is issued.

(4) Every summons shall be served by a police officer or by an officer of the Court issuing it.

(5) The summons shall, if practicable, be served personally on the respondent, by delivering or tendering to him one of the duplicates of the summons.

(6) Every respondent on whom the summons is so served shall, if so required by the serving officer, sign a receipt therefor on the back of other duplicate.

(7) Where the respondent cannot, by the exercise of due diligence, be found, the summons may be served by leaving one of the duplicates for him with some adult male member of his family residing with him, and the person with whom the summons is so left shall, if so required by the serving officer, sign a receipt therefor on the back of the other duplicate.

(8) If the service cannot, by the exercise of due diligence, be effected as provided in sub-rule (6), or sub-rule (7), the serving officer shall affix one of the duplicates of the summons to some conspicuous part of the house or homestead in which the respondent ordinarily resides; and thereupon the Court, after

making such inquiries as it thinks fit, may either declare that the summons has been duly served or order fresh summons in such a manner as it considers proper.

(9) When a Court desires that a summons issued by it shall be served at any place outside its local jurisdiction, it shall ordinarily send such summons in duplicate to a Magistrate within whose local jurisdiction, the respondent resides, or is, to be there served.

(10) When a summons issued by a Court is served outside its local jurisdiction and in any case when an officer who served the summons is not present at the hearing of the case, an affidavit purporting to be made before a Magistrate that such summons has been served and a duplicate of summons purporting to be endorsed [in the manner provided by sub-rule (6) or sub-rule (7)] by the person to whom it was delivered or tendered or with whom it was left shall be admissible in evidence and the statements made therein shall be deemed to be correct unless and until the contrary is proved.

(11) The affidavit mentioned in sub-rule (10) may be attached to the duplicates of the summons and returned to the Court.

4. Evidence.—All evidence in the proceedings under the Act shall be taken in the presence of the respondent against whom an order for the payment of provision and maintenance, Mahr or power or the delivery of property is proposed to be made or, when his personal attendance is dispensed with, in the presence of his pleader, and shall be recorded in the manner specified for summary trials under the Code:

Provided that if the Magistrate is satisfied that the respondent is wilfully avoiding service or wilfully neglecting to attend the Court, Magistrate may proceed to hear and determine the case ex parte and any order so made may be set aside for good cause shown on application made within seven days from the date thereof subject to such terms as to payment of cost to the opposite party as the Magistrate may think just and proper.

5. Power to postpone or adjourn proceedings.—In every application under the Act, the proceedings shall be held as expeditiously as possible and in particular, when the examination of witnesses has once begun, the same shall be continued from day to day until all the witnesses in attendance have been examined unless the Court finds adjournment of the same beyond the following day to be necessary for reasons to be recorded.

6. Costs.—The Court in dealing with the applications under the Act shall have power to make such order as to cost as may be just.

7. Affidavit under section 5.—An affidavit filed under section 5 of the Act shall be in Form ‘A’.

8. Declaration under section 5.—A declaration in writing filed under section 5 shall be in Form ‘B’.

**Form A**  
**FORM OF AFFIDAVIT**  
(See rule 7)

I/we.....son/wife of ..... aged ..... years, resident of ..... and ..... son/wife of ..... aged ..... years, resident of ..... hereby state on oath as follows:—

1. That I/we have informed myself/ourselves of the provisions of section 5 of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986 and of the provisions of sections 125 to 128 of the Code of Criminal Procedure, 1973.
2. That I/we ..... desire to be governed by the provisions of sections 125 to 128 of the Code of Criminal Procedure, 1973 in preference to the provisions of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986.
3. That the contents of the above affidavit are true.

Deponent|Deponents.

Signed and verified at ..... this the..... day of ..... 19.....

Deponent|Deponents.

**Form 'B'**  
**FORM OF DECLARATION**  
(See rule 8)

I/we ..... son/wife of ..... aged ..... years, resident of ..... and ..... son/wife of ..... aged ..... years, resident of ..... hereby declare as follows :—

1. That I/we have informed myself/ourselves of the provisions of section 5 of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986 and of the provisions of sections 125 to 128 of the Code of Criminal Procedure, 1973.
2. That I/we ..... desire to be governed by the provisions of sections 125 to 128 of the Code of Criminal Procedure, 1973 in preference to the provisions of the Muslim Women (Protection of Rights on Divorce) Act, 1986.
3. That the contents of the above declaration are true.

Deponent|Deponents.

Signed and verified at ..... this the ..... day of ..... 19.....

Deponent|Deponents.

[F. No. 11(27)/85-Leg. III]

C. RAMAN MENON. Addl. Secy.